

1. 370

卷之四

रथी ३ गुनवनमः॥ लिङ्गार्चनविधिः॥ नासियः॥ ॐ
सगत्वाय स्वाहा॥ क्रीविशागत्वाय स्वाहा॥ श्रीगिवगत्वाय स्वाहा॥ न्या
सयाय॥ ॥ ५४ अष्टाय रुट् ॥ ४॥ ॥ ५४ अंगुष्टायां नमः॥ क्रीगर्जनी
यां नमः॥ ५४ मध्वमायां नमः॥ ५४ अनामिकायां नमः॥ ५४ कनिष्ठा
यां नमः॥ ५४ कनकनपृष्ठायां नमः॥ ५४ हृदयाय नमः॥ ५४ क्रीगि

लसं स्वाहा ॥ इं गिखाये वायु ॥ इं कवचाय इं ॥ इं नजययाय
वीषट् ॥ इं अश्वाय रुट् ॥ ॥ **जलपापपूजा** ॥ ॥ ब्रह्म (६) न
मः ॥ विष्णु वनमः ॥ नूजाय नमः ॥ श्रीधराय नमः ॥ सदाशिवाय न
मः ॥ आवाहनादिवन्दनाकृतपूर्य्यनमः ॥ ॥ धनू मूर्त्तिदर्शयत् ॥
लेखनधर्महाय ॥ ॥ आत्मनसि वय ॥ आत्मनवन्दननमः ॥ आ

त्मनपूर्य्यनमः ॥ आत्मासनाय नमः ॥ आत्ममूर्त्तय नमः ॥ ॥
सूर्यपूजायाय ॥ ॥ धवनयश्चासनाय नमः ॥ इं इंसः ॥ श्रीसूर्या
य, इं नास्ति दवी गकि सहिताय नमः ॥ ३ ॥ ॥ इंदवलिगृहं २ स्वाहा
॥ गभयशी ॥ उग्रनजाय विष्णुह, राक्षनाय धीमहि, गन्तारानूयवाउ
या ७ ॥ ॥ जय ॥ ॥ इं इंसः ॥ स्वाहा ॥ १० ॥ ॥ अर्पगृहानस्वाहा ॥ ॥

स्तुत ॥ जवाकू सुमसंकासं, कासिप्रियमहा इति । तं भावि सर्वपापघ्नं
बलमामिदिवाकन ॥ आदि त्याय अगुग भवर्जन विधो तत्सर्वं यविपू
र्णमस्तु ॥ ॥ **विष्णु पूजा** ॥ ॥ गनूजसनायनम ॥ ॥ कौसनमानाः
नायत्यविश्वत्सनं, कौजयादवीगकि सहितायनम ॥ ३ ॥ ॐ देव
लिगृहं २ स्वाहा ॥ ॥ **भयवि** ॥ विष्णुनूपायविग्रह, नानायत्ययधी

महि । तन्नाचूतयवागुया ॥ ॥ जय ॥ ॥ कौस ४ स्वाहा ॥ १० ॥
जयं गृहान स्वाहा ॥ ॥ **स्तुत** ॥ नमस्तु ननाय सहस्रमूर्ति, सहस्रपा
दाक्षना वूवाहव, सहस्रनाभय पूरवाय सासुत, सहस्रकाटियुग
धविननम ॥ विष्णुव अगुग भवर्जन विधो तत्सर्वं यविपूर्णमस्तु ॥
॥ ॥ **शिव पूजा** ॥ ॥ वृषासनायनम ॥ ॥ कौकौस ४ दागिवायन

म॥ ३ ॥ ॐ देवलिगृहं २ स्वाहा ॥ ॥ गायत्रि ॥ निवन्वपायविद्म
हं सदा निवायधीमहि तन्ना नूदयवा दया ७ ॥ ॥ जय ॥ ॥
जां कोस ४ स्वाहा ॥ १० ॥ अयं गृहान स्वाहा ॥ ॥ स्तुति ॥ निर्वं निवक
नं भक्तं निवात्मानं निवाहम निवमार्गं प्रनिगालं प्रलमामि
दा निवः ॥ सदा निवाय अग्नौ गन्धार्चन विधौ न सर्वं य विष्णुं मस्तु ४

॥ ॥ मृत्युञ्जय पूजा ॥ ॐ वृषासनाय नमः ॥ ॐ शंभु ४ मृत्युञ्जया
य अमिर्लसमहासे नवायः महालक्ष्मीं किं स हिनाय नमः ॥ ३
॥ ॐ देवलि ॥ ॥ गायत्रि ॥ ॐ मृत्युञ्जया य विद्महं अमृतिं
वायधीमहि तन्ना नूदयवा दया ७ ॥ ॥ जय ॥ ॐ शंभु ४ स्वाहा ॥
१० ॥ अयं गृहान स्वाहा ॥ ॥ स्तुति ॥ शुद्धं भक्तं निवयसौ दय नमः

सर्वरूपकिञ्चन, सानन्दसूत्रनायकं स रगवान् सर्वैर्षु कृतं काम
 पदं वागीश्वरवन्द्यं वाग्युक्तां वा मादिगच्छन्ती व्याधिसाकविना
 सकृद्वरयहा, मृत्युञ्जयगोहिमा ॥ मृत्युञ्जयाय अंगगन्धर्वनविः
 शोभसर्वपरिपूर्वमस्तु ॥ ॥ **अधानपूजा** ॥ ॥ ॐ वृषासनाय नमः ॥
 ॐ अधानकां धधानकां धालधानकां नमः ॥ सर्वगः सर्वसर्वः कोऽहं ॥

कोऽहं नूतनयुक्तः श्रीगिरिवासकन्दमहारेणवायनमः ॥ ३ ॥ ॐ देव
 लिंगं देवस्वाहा ॥ ॥ **मयप्रि** ॥ ॐ गिरिवा नाथयविष्णु, स्वकन्दाय धी
 महि, गन्तानूतनप्रदाय ॥ ॥ **जय** ॥ ॐ अधानकां स्वाहा ॥ १० ॥
 जयगुहानस्वाहा ॥ ॥ **काय** ॥ ॥ यानिकानि प्रयायानि, जन्मानकनक
 तानि च । गानि गानि विनस्यन्ति, पदद्विषयपदपद ॥ अधानाय अ

पुगन्धार्चनविधौ तसर्वयविष्णुर्मुमुक्षुः ॥ गणेशपूजा ॥ ॥ मू
क्षसनायनमः ॥ गंगेगुंग ॥ श्रीकूलगणेशायनमः ॥ ३ ॥
ॐ देवर्लिंगं द्रुं २ स्वाहा ॥ ॥ गयत्रि ॥ तत्पूज्याय विद्मह वक्रु
न्दाय धीमहि तन्नादक्रियया दया ॥ ॥ जय ॥ ॥ स्वाहा ॥ १० ॥
॥ गणानां गणपति ॥ श्वेव गजवक्रुणित्राचरन् । यस्मिन्नास्वकु

भनित्यं बलदाता विनायक ॥ हनन्धायनमंदव कार्यसिद्धिविना
यक । सोराग्यनूपसंयम दहिमसुखसंयद ॥ ॥ कूलगणेशाय
यज्जगन्धार्चनविधौ तसर्वयविष्णुर्मुमुक्षुः ॥ ॥ विष्णुयास्वान
काया उच्यते ॥ ॥ न्यासयाय हवायाथ ॥ ॥ नासिय ॥ ३ ॥ स्वस्ति
नवासास्वकु कतन्य ॥ ॥ ॐ निलिम्भार्चनविधिसमाप्त ॥ ॥ ३ ॥

ॐ श्री गुरु नमः ॥ ॥ नासिय ॥ द्वापायाथ ॥ ३ ॥ ॥ अथ
अस्मत्तिलकर्मदवाञ्जननिमित्तार्थं कर्तुं श्रीसूर्याय अर्घ्यं नमः ॥ पूष्य
नमः ॥ ॥ खानकजाडातागय ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं हूं ह्रौं ॥ अखन्दमन्दनाका
लं, धाफंजनवराचलं । तत्पदं दगितं जन, तस्मै श्रीगुरु नमः ॥ ॥ गुरु
वन्द्या गुरुविष्णु, गुरुदवमहेश्वर, गुरुसर्वजगद्वर, तस्मै श्रीगुरु नमः ॥

॥ श्रीगुरुपादुकी ॥ ॥ आसनगत्य ॥ ॥ जपद्वासनायपादुकी ॥ दव
रु ॥ ॥ वलिस ॥ ॐ जपद्वासनायपादुकी ॥ ॥ थडाक ॥ ॐ जपद्वासनाय
पादुकी ॥ ॥ निषानककायाडा, जडाखडागिन ॥ ॥ ॐ जपदिनिश
विष्णुकाकनार्य ॥ ॥ अष्टायरुद्र ॥ ॥ निषायादधूलानककायाडा, व
कुसाधनयाय ॥ ॥ ॐ जपद्वासनायपादुकी ॥ ॥ ॐ जपद्वासनायपादुकी ॥ ॥ ॐ जपद्वासनायपादुकी ॥

लमकूल कूलमवल काँक्रीकूँ रुद्र स्वाहा ॥ ॥ **न्याययाय** ॥ ॥ हूँ
गुनवनमः ॥ ॥ ऐंगलधिपतयनमः ॥ ॥ जेखदवतायनमः ॥ ॥
कूँ ३ ॥ रुद्र ३ ॥ **प्राप्तयामयाय** ॥ यं स्वाहा १४ साइकाय ॥ नं स्वाहा ३४
साकून ॥ वं स्वाहा ३२ **सातालन** ॥ ॥ क० अष्टाय रुद्र ॥ ४ ॥ काँ अंगु
ष्टायानमः ॥ काँ गऊनी र्यां नमः ॥ कूँ मध्ममा र्यां नमः ॥ के अनामिका र्यां

३थनवक्रमास

नमः ॥ काँ कनिष्टा र्यां नमः ॥ क० कनगवष्टा र्यां नमः ॥ ॥ काँ हृद
यायनमः ॥ काँ गिलस स्वाहा ॥ कूँ गिराये वोषट् ॥ के कवचाय कूँ ॥ काँ
नगुयाय वोषट् ॥ क० अष्टाय रुद्र ॥ ३ ॥ **जलपात्रपूजा** ॥ ॥ जे
हृद आनन्द गकिरे नवानन्द विवाधिपतय सर धी जलपात्ररदानक
पाइकी ॥ काँ हृदयादि ॥ ३ ॥ आवाहनादि ॥ ॥ धनमूद्रादर्शय ॥ ॥

मयरी ॥ जेऊ कजिकाय विमरु कलदीपायधीमही गननाकुजिप्र
वादया ७ ॥ ॥ सकल लंघन हाय ॥ ॥ अर्घपागपूजा ॥ जेऊ जेऊ काना
सनायपाइकी ॥ ॥ धन ॥ जेऊ हरे पागु पूनय स्वाहा ॥ ॥ विन्दु म
जानवाले ॥ जेऊ लूं मूं लूं लूं लूं जां जां दूं स्तूत्र २ प्रस्तूत्र २ धान २ ग
नगन रूप चट २ प्रचट २ कह २ वम २ घागय २ विघागय २ विघि २

दूं ३ रुट जां श्रीमहाकोमारी का विघयाइकी ॥ ॥ कर्तन ॥ जेऊ म
र आनन्द गकिरे वानन्द श्रीमहाविद्यानाश्रमनी हर श्री अर्घपा
ग हावकपाइकी ॥ जां हदयादि ॥ ७ ॥ आवाहनादि यानि मूडा
दर्शय ७ ॥ ॥ कर्म मूडा म गिकाष वाकवायाउ कतयाउ लुगसू
दियाय ॥ ॥ जेऊ श्री भूं भूं भूं श्री जां जेऊ हरे आनन्द ग

किं रे नवानन्दविनाधियगय. स र आत्मपापकृदनाय अष्टाय रु
दु॥ ॥ **आत्मपूजा** ॥ ॥ त्रें वन्दनया इकी ॥ ॥ डी अक्षगया इकी ॥
श्री वी नरससिन्दु नया इकी ॥ ॥ भूँ सर्वजनमाहनीया इकी ॥ ॥
सूँ पूषया इकी ॥ ॥ दूँ सोया इकी ॥ ३ ॥ ॥ **थन द व आवाह**
नयाय ॥ ॥ त्रें ज धी सन्धरामधुलान्क कमयदसहिगानन्दन कि ॥

सूरीमा, सुष्टिं न्यायवकुर्क अकलकलगरिपेचक वा न्यषदं, व
त्तानायचको (६) पूननपिचकुना, तनामधुलन, सगृष्टं यनगसेन
मनगुनूवने रे नव श्री कृजस ॥ ॥ ॐ द आवाहयामि ॥ **क लेखन द**
वदुयकाउ, वलिसगय ॥ ॥ ॐ द पाडी नमः **गंष** ॥ ॐ द अर्ध नमः **अ**
र्धा ॥ ॐ द अलिस्ताने नमः **अर्धपात** ॥ पूनवाचमनीये नमः **अर्धाने** ॥ वन्द

नैनमः सिद्धनैनमः अरुनैनमः अरुणवीर, पूर्यनमः॥ ॥ पञ्च
बलिपूजा॥ ॐ मयूनासनायपाइकी॥ ननासनयाइकी॥ गवासनया
इकी॥ धनासनयाइकी॥ मूषासनयाइकी॥ ॥ बलिविय॥ ॐ श्री
क्रीकूलपूगवशुकनाथायवलि, गृह्ण २ स्वाहा॥ ॐ कौंक्रीकूंक ४ क
उपात्तायवलि, गृह्ण २ स्वाहा॥ ॐ यांयागिनीत्तायवलि, गृह्ण २ स्वाहा॥

ॐ शुं सिद्धिबाम् (पु) श्वरीवलि, गृह्ण २ स्वाहा॥ ॐ गंगीगूंग ४ (श्री) श्री
कूलग (पु) श्वनायवलि, गृह्ण २ स्वाहा॥ ॥ आवाहनादिचन्दनाक्षरपूष्य
नमः॥ ॥ धन, शिदवपूजा॥ ॥ ॐ ननासनायपाइकी॥ ॐ मः
यूनासनायपाइकी॥ ॐ मूषासनायपाइकी॥ ॥ ॐ कौंक्रीकूंक ४ क
उपात्तायपाइकी॥ ३॥ ॐ देवलि॥ ॥ ॐ श्रीक्रीकूलपूगवशुकनाथ

यथाइकी॥ ३ ॥ ॐ देवलिं ॥ ॥ ॐ अंगंगिगुंग ॥ ॐ श्रीकूलगलध्वना
यथाइकी॥ ३ ॥ ॐ देवलिं ॥ ॥ आवाहनादि ॥ दधु, गरुनी, गरुम
दीदर्शय ॥ ॥ विन्दुविय ॥ नमः श्रीनाथयनमः ॥ नमः श्रीसिद्धिनाथ
यनमः ॥ नमः श्रीकूलगनाथयनमः ॥ ॥ **गुनमधुलपूजा ॥** ॥
ॐ अ यद्मासनायथाइकी ॥ ॐ अ गवासनायथाइकी ॥ ॥ ॐ अ हर आन

न्दगकिरे नवानन्दविनाधियतय स र श्रीनवात्मा गुनमूर्त्यथाइकी ॥
३ ॥ ॐ देवलिं ॥ ॥ ॐ अ स र आनन्दगकिरे नवानन्द श्रीमहाविद्या
नाथश्वरी हर श्रीनवात्मिकश्वरीथाइकी ॥ ३ ॥ ॐ देवलिं ॥ आवाहना
दि ॥ विष्णुल, यानिमूर्त्ति ॥ नमः श्रीनाथय ॥ ३ ॥ ॥ ॐ अ स र श्रीव
द्मासनादि अष्टमारुक्थाथाइकी ॥ ॐ देवलिं ॥ ॥ ॐ अ हर श्रीअग्नितां



ASHA ARCHIVES

1370



झादि अष्टसे नवायपाइकी ॥ ॐ देवलि ॥ ॥ जे अष्टी निखाख कन्दमहा
से नवायपाइकी ॥ ॐ देवलि ॥ ॥ जे अष्टी सिंहासनायपाइकी ॥ जे अष्टी
धी उग्रवधुदधियाइकी ॥ ३ ॥ ॐ देवलि ॥ ॥ **कर्म पूजा** ॥ जे अष्टी
वासनायपाइकी ॥ अष्टी सिंहासनायपाइकी ॥ अष्टी यशसनायपाइकी ॥
॥ ॥ जे अष्टी हृत् आनन्दगकि से नवानन्द विनाधिपतय सत् श्री अष्टी

विंशतिकर्मरहानकायपाइकी ॥ ३ ॥ ॐ देवलि ॥ ॥ त्रेंजमर आ
नन्दनकिरेनवानन्द श्रीमहाविद्यानाम श्रीगुरु हर श्री अष्टविंशतिः
कर्मरहानकायपाइकी ॥ ३ ॥ ॐ देवलि ॥ ॥ आवाहनादि ॥ धन
यानिमूर्तीदर्शय ॥ नमः श्रीनाथाय ३ ॥ ॥ धन, मूलस्नान पूजा ॥
॥ ॥ त्रेंज वृषासनपाइकी ॥ त्रेंज सिंहसनपाइकी ॥ त्रेंज पञ्चप्रणसनपा

इकी ॥ ॥ ध्यान ॥ त्रेंज वृषासनसंस्कारद्वय, स्ववर्षुनूप (गतिग) एकवर्क
गिनगव, सुजाष्टदशधनिर्ग ॥ उमनूपर्षुवागश्च, स्वममङ्कगवडक,
गंषश्चवीनवायश्च, वनदकनदकि (ग) ॥ वामखट्वाङ्गमूलश्च, धन ॥ रुल
कपागक, घर्षकपातवीनाश्च, अर्यर्यनागने ॥ पदनवन्धितजाने
वामानूकश्चदवर्गि, एकवर्कगिनगश्च, अनूगवर्षुवर्गिता ॥ दिरु

जावनदीदक्ष, सिंहल, इत्यस्यसू। नानाखण्डा, सनदनन
तस्यैता ॥ रं नवानन्दनूपार्य, जं जं जं यकीर्तिता। एवध्वत्वावना
नाह, द्विपसिद्धिनिमानव ॥ जं जं नपूषयाइकां ॥ ^{पाद्य} पूजा ॥



















